

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में उपादेयता

विजय सिंह¹ एवं डॉ. निरूपमा जैन²

¹ शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

² शोध निर्देशिका, राजस्थान महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर

Article Info

ABSTRACT

Article history:

Received Jul 12, 2026

Accepted Jul 22, 2026

Published Jul 31, 2026

Keywords:

स्वामी विवेकानंद

शैक्षिक विचार

शैक्षिक दर्शन

चरित्र निर्माण

वर्तमान शिक्षा

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके माध्यम से व्यक्ति के अंतर्निहित गुणों का विकास होता है, उसका ज्ञान और कौशल बढ़ता है, और वह एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। किंतु वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था केवल तकनीकी कौशल और रोजगार पर केंद्रित हो गई है। नैतिक मूल्य, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास इसमें नगण्य रह गया है। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन इसी खाई को पाटने का प्रयास करता है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं है, बल्कि मानव का निर्माण करना है। वह विश्वास करते थे कि शिक्षा से आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और सेवा भावना का विकास होता है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि उनके शैक्षिक विचार आज की शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। चरित्र निर्माण, सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में उनके विचार वर्तमान शिक्षा को नई दिशा दे सकते हैं।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



Corresponding Author:

विजय सिंह

Email: phd24_vijay@mlsu.ac.in

1. परिचय:

शिक्षा मानव जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके बिना व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से पिछड़ा रहता है। शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य को पशुता से मुक्त करके मानवीय गुणों का विकास करती है। किंतु केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है। असली शिक्षा वह है जो व्यक्ति के चरित्र को निखारे, उसके आत्मविश्वास को जागृत करे, और उसे समाज के लिए उपयोगी बनाए। आधुनिक काल में शिक्षा के उद्देश्य निरंतर बदल रहे हैं। पश्चिमी प्रभाव के कारण शिक्षा केवल नौकरी प्राप्त करने का माध्यम बन गई है। विद्यार्थी अंक प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं, ज्ञान अर्जन के लिए नहीं। परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था ने शिक्षा को यंत्रवत बना दिया है। ऐसे समय में नैतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक विकास और मानवीय गुणों की शिक्षा लगभग लुप्त हो गई है। भारतीय शिक्षा परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। गुरुकुलों में वेद, दर्शन, नीति और कला की शिक्षा दी जाती थी। इसका लक्ष्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि आत्मज्ञान था। यह परंपरा कालांतर में विलुप्त हो गई। स्वामी विवेकानंद ने इसी परंपरा को पुनः जीवित करने का प्रयास किया। वे माना करते थे कि शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य मानव निर्माण है, न कि कर्मचारी तैयार करना।

विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन आधुनिकता और परंपरा का सुंदर संमिश्रण है। उन्होंने भारतीय मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। उनके विचार व्यावहारिक, तर्कसंगत और सर्वकालीन हैं। वे विश्वास करते थे कि शिक्षा से न केवल व्यक्तिगत विकास होता है, बल्कि राष्ट्र का निर्माण भी होता है। आज जब देश की शिक्षा व्यवस्था संकट में है, तब उनके विचारों को समझना अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा में नैतिक मूल्यों की कमी, अत्यधिक

व्यावसायीकरण, परीक्षा का दबाव, विद्यार्थियों का आत्मविश्वास कम होना—ये सभी समस्याएँ विवेकानंद के समय में नहीं थीं। किंतु उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत इन सभी समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकते हैं। चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और सेवा भावना—ये सभी उनके शैक्षिक दर्शन के केंद्र में हैं। इसीलिए इस अध्ययन में विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता को विश्लेषित किया जा रहा है। यह दिखाना आवश्यक है कि उनके विचार केवल ऐतिहासिक महत्व के नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से आज भी उपयोगी हैं।

2. शोध-उद्देश्य

1. स्वामी विवेकानंद के प्रमुख शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना, विशेषकर उनके द्वारा प्रतिपादित चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और व्यक्तित्व विकास के सिद्धांतों को समझना।
2. वर्तमान युग की शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख चुनौतियों के संदर्भ में विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की उपादेयता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना, तथा यह दर्शाना कि उनके विचार किस प्रकार आधुनिक शिक्षा को दिशा दे सकते हैं।

3. शोध-पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें मुख्यतः गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन उपलब्ध शोध साहित्य के माध्यम से किया गया है। अध्ययन में उपलब्ध कराए गए विभिन्न शोध पत्रों और अनुसंधान कार्यों का उपयोग किया गया है। विवेकानंद के विचारों को समकालीन शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में समझा और विश्लेषित किया गया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य केवल विचारों को प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उनकी वर्तमान प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है। शोध में केवल दिए गए प्रामाणिक स्रोतों का ही प्रयोग किया गया है। किसी भी काल्पनिक या स्वनिर्मित जानकारी का समावेश नहीं है।

4. स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक चिंतन

स्वामी विवेकानंद का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक जीवंत शिक्षा दर्शन है। उनके समस्त विचारों में शिक्षा की गहरी समझ दिखाई देती है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं है। शिक्षा तो वह है जो मनुष्य के अंदर निहित शक्तियों को जागृत करे, उसके आत्मविश्वास को जगाए, और उसे एक पूर्ण मनुष्य बनाए। (शर्मा एवं अग्रवाल, 2024) के अनुसार विवेकानंद मानते थे कि शिक्षा का प्रयोजन मनुष्य का निर्माण करना है। जब कोई व्यक्ति अपने को जानता है, अपनी शक्तियों में विश्वास रखता है, तब उसका जीवन सफल हो जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही यह संभव है। विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक बालक में असीम संभावनाएँ होती हैं। शिक्षक का काम इन संभावनाओं को विकसित करना है, दबाना नहीं।

विवेकानंद ने मनुष्य निर्माण को शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य माना। (यादव, 2025) लिखते हैं कि विवेकानंद के अनुसार शिक्षा वह है जो व्यक्ति को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करे। किताबों का ज्ञान महत्वपूर्ण है, किंतु जीवन कौशल उससे अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाए, उसे अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता दे। चरित्र निर्माण विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का केंद्रबिंदु है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा के बिना चरित्र का निर्माण संभव नहीं है। किंतु चरित्र निर्माण का अर्थ केवल नैतिक नियमों का पालन नहीं है। यह तो मनुष्य के अंदर ऐसी शक्ति का विकास है जो उसे सही-गलत का भेद करना सिखाए, और सही मार्ग पर चलने के लिए साहस दे। (चौहान एवं शर्मा, 2022) के अनुसार विवेकानंद मानते थे कि एक चरित्रवान व्यक्ति ही समाज का सेवा कर सकता है। इसलिए शिक्षा को चरित्र निर्माण के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास पर भी जोर देना चाहिए। आत्मविश्वास विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है। वे मानते थे कि भारतीय बालकों में आत्मविश्वास की कमी है। वे अपनी शक्तियों को नहीं पहचानते, और इसी कारण पिछड़े हुए हैं। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य इसी आत्मविश्वास को जगाना है। जब कोई व्यक्ति अपनी क्षमता में विश्वास करने लगता है, तब वह असंभव को भी संभव कर सकता है। विवेकानंद ने यही सन्देश दिया। आत्मनिर्भरता शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। विवेकानंद चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो लोगों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाए। शिक्षा केवल सरकारी नौकरी के लिए नहीं, बल्कि आजीविका अर्जित करने का कौशल सिखानी चाहिए। हर व्यक्ति को कोई न कोई कार्य कुशलता सीखनी चाहिए। (कुमार, 2025) के अनुसार विवेकानंद ने व्यावहारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का संबंध जीवन से होना चाहिए, न कि किताबों तक सीमित होना चाहिए।

नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा विवेकानंद के विचारों का अभिन्न अंग है। वे समझते थे कि केवल बौद्धिक विकास पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक ज्ञान की भी आवश्यकता है। (बनर्जी, 2015) लिखते हैं कि विवेकानंद शिक्षा को संपूर्ण विकास का साधन मानते थे। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास, ये सभी शिक्षा के अभिन्न अंग हैं। कोई एक पहलू पूर्ण नहीं है। शिक्षक की भूमिका के संदर्भ में विवेकानंद के विचार विशेष महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाला नहीं है। वह तो एक प्रेरणा स्रोत है, एक मार्गदर्शक है। शिक्षक का कर्तव्य

विद्यार्थियों की अंतर्निहित शक्तियों को जागृत करना है। यह कार्य केवल तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं आदर्श चरित्र का हो, स्वयं आत्मविश्वासी हो, और विद्यार्थियों से सच्चा प्रेम रखता हो। विद्यार्थी की स्वतंत्रता विवेकानंद के विचारों में एक प्रमुख स्थान रखती है। वे अनुशासन में विश्वास करते थे, किंतु दमनकारी अनुशासन में नहीं। विद्यार्थी को सोचने-विचारने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। उसे प्रश्न करने की अनुमति होनी चाहिए। बिना तर्क के कुछ भी स्वीकार न करने की शक्ति ही असली शिक्षा है। (द्विवेदी, 2024) के अनुसार विवेकानंद ने विद्यार्थी को 'विद्यार्थी' की परिभाषा को समझते हुए कहा कि उसका काम सीखना है, न कि अंध अनुकरण करना।

5. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख चुनौतियाँ

वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है।

- पहली और सबसे बड़ी चुनौती नैतिक मूल्यों का ह्रास है। आज की शिक्षा पूरी तरह बाजार-केंद्रित हो गई है। कमाई और सफलता ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया है। नैतिकता, सत्य, न्याय जैसे मूल्य गायब हो गए हैं। विद्यार्थी केवल अंक प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं, ज्ञान के लिए नहीं।
- दूसरी समस्या परीक्षा केंद्रित शिक्षा है। सारा जोर परीक्षा में अच्छे अंक लाने पर है। इससे विद्यार्थियों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। आत्महत्या की घटनाएँ बढ़ रही हैं। विद्यार्थी तनाव और अवसाद से ग्रस्त हैं। सीखने का आनंद खो गया है।
- तीसरी समस्या चरित्र निर्माण की उपेक्षा है। पाठ्यक्रम में नैतिकता के बारे में कुछ बातें लिखी तो हैं, किंतु व्यावहारिक रूप से इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार, बेईमानी, और अनैतिकता बढ़ रही है। (कुमारी, 2022) के अनुसार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थी के चरित्र को नकारते हुए केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर ध्यान देती है।
- चौथी समस्या आत्मविश्वास की कमी है। भारतीय विद्यार्थी पश्चिमी शिक्षा के कारण अपनी परंपरा को भूल गए हैं। वे अपनी संस्कृति को हीन मानते हैं। पश्चिम की नकल करना ही सफलता समझते हैं। इससे आत्मविश्वास खो गया है।
- पाँचवीं समस्या शिक्षा और रोजगार के बीच बड़ी दूरी है। किताबी ज्ञान देश भर में एकसाँ है, किंतु रोजगार के अवसर सीमित हैं। लाखों स्नातक बेरोजगार हैं। (राजपूत एवं उनियाल, 2016) के अनुसार शिक्षा ने विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के लिए तैयार नहीं किया है।
- छठी समस्या सामाजिक असमानता है। अभी भी बड़ी संख्या में बालकों को शिक्षा की सुविधा नहीं मिल रही है। आर्थिक कारणों से लड़कियों को शिक्षा से वंचित किया जाता है।

6. वर्तमान युग में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की उपादेयता

यह शोध-पत्र का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। विवेकानंद के विचार आज की शिक्षा के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं, यह समझाना आवश्यक है।

- **मूल्य-आधारित शिक्षा में उपयोगिता:** वर्तमान शिक्षा में नैतिकता का अभाव सबसे बड़ी समस्या है। विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन मूल्यों पर आधारित है। उनके अनुसार शिक्षा को धर्म, सत्य, और न्याय की शिक्षा देनी चाहिए। यह केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा भी है। (अग्रवाल एवं मिश्रा, 2023) के अनुसार विवेकानंद की मानव-निर्माणकारी शिक्षा वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित कर सकती है। जब विद्यार्थी को आरंभ से ही नैतिकता की शिक्षा दी जाए, तो वह भविष्य में ईमानदार और न्यायप्रिय नागरिक बनता है।
- **चरित्र निर्माण में उपयोगिता:** विवेकानंद का सबसे प्रमुख विचार है कि शिक्षा से चरित्र का निर्माण होता है। एक चरित्रवान व्यक्ति समाज के लिए आशीर्वाद है। कुशल किंतु चरित्रहीन व्यक्ति समाज के लिए श्राप है। वर्तमान समय में जब भ्रष्टाचार और बेईमानी चारों ओर व्याप्त है, तब चरित्र निर्माण की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। विवेकानंद की शिक्षा व्यवस्था यदि लागू की जाए, तो समाज में एक नई चेतना आएगी।
- **सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास:** विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और भावनात्मक विकास सभी का समावेश करे। आज का विद्यार्थी केवल बौद्धिक रूप से विकसित है, किंतु शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक रूप से कमजोर है। योग, व्यायाम, कला और संस्कृति को पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है। (कुमार, 2024) के अनुसार विवेकानंद के विचार व्यक्ति के सभी पहलुओं के विकास पर जोर देते हैं।
- **आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता:** वर्तमान समय में विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भारी कमी है। पश्चिमी प्रभाव ने उन्हें अपनी संस्कृति और मूल्यों से दूर कर दिया है। विवेकानंद का संदेश है कि भारतीय बालकों को अपने पूर्वजों पर गर्व होना चाहिए। उन्हें अपनी क्षमता पर विश्वास

करना चाहिए। (रेणू एवं चौहान, 2022) के अनुसार विवेकानंद की शिक्षा विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाती है। जब विद्यार्थी कोई कौशल सीख जाता है, तो वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाता है। यह आत्मनिर्भरता ही वास्तविक सफलता है।

- **शिक्षक की भूमिका:** विवेकानंद के अनुसार शिक्षक समाज का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है। शिक्षक को केवल ज्ञान नहीं देना, बल्कि प्रेरणा भी देनी चाहिए। आज के शिक्षकों को विवेकानंद के विचारों को समझना चाहिए। वे अपने विद्यार्थियों के साथ वास्तविक संबंध बनाएँ। उनकी प्रतिभा को पहचानें। उन्हें आत्मविश्वास दें। (राठोड, 2014) के अनुसार विवेकानंद का शिक्षक-दर्शन यह मानता है कि शिक्षक एक दोस्त, एक गाइड, एक प्रेरणा स्रोत है।
- **विद्यार्थी का विकास:** विद्यार्थी समाज का भविष्य है। विवेकानंद विद्यार्थी की आंतरिक क्षमता में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि प्रत्येक विद्यार्थी में अलग प्रतिभा है। शिक्षा का काम इसी प्रतिभा को निखारना है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को भी यही दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हर बालक को कोशिश करने का अवसर दिया जाए। उसकी व्यक्तिगत शक्तियों को समझा जाए।
- **शिक्षा और राष्ट्र निर्माण:** विवेकानंद का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण विचार था कि शिक्षा राष्ट्र निर्माण का साधन है। (प्रेमी, 2012) के अनुसार विवेकानंद मानते थे कि जब तक राष्ट्र के युवा आत्मविश्वासी, चरित्रवान और जिम्मेदार नहीं होंगे, तब तक राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। शिक्षा के माध्यम से ऐसे नागरिक तैयार किए जा सकते हैं जो देश के विकास में योगदान दें।
- **तकनीकी युग में प्रासंगिकता:** डिजिटल शिक्षा का विस्तार हो रहा है। किंतु तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ मानवीय मूल्य भी जरूरी है। (सिंह, 2025) के अनुसार विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन प्रौद्योगिकी के दुष्प्रभावों से बचाव प्रदान करता है। वह मनुष्य को मशीन बनने से रोकता है और उसे सजग, विचारशील और नैतिक व्यक्ति बनाता है।
- **युवा शिक्षा में उपयोगिता:** युवा वर्ग देश की शक्ति है। विवेकानंद के समय भी युवाओं को जगाना प्रमुख लक्ष्य था। आज भी यही आवश्यकता है। युवाओं को आत्मविश्वास, अनुशासन, उद्देश्यपूर्ण जीवन और सेवा भावना की शिक्षा दी जानी चाहिए। विवेकानंद का संदेश है कि युवा आत्मनिर्भर बनें, अपनी शक्तियों का सही उपयोग करें, और समाज के विकास में भाग लें।

7. समकालीन शिक्षा के लिए शैक्षिक निहितार्थ

विवेकानंद के विचारों से आधुनिक शिक्षा व्यवस्था बहुत कुछ सीख सकती है। पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाए जाने चाहिए। नैतिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए। शारीरिक शिक्षा, कला और संस्कृति को महत्व दिया जाए। शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाए कि वे केवल ज्ञान नहीं, बल्कि मूल्य भी प्रदान करें। परीक्षा व्यवस्था को ऐसा बनाया जाए कि यह विद्यार्थियों को दबाए नहीं, बल्कि प्रोत्साहित करे। (बुच, 1974) के अनुसार शिक्षा प्रणाली को इस तरह डिजाइन किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी का संपूर्ण विकास हो। (बुच, 1972) के अनुसार वर्तमान शिक्षा में व्यावहारिक पहलू जोड़े जाने की आवश्यकता है।

8. आलोचनात्मक विवेचन

विवेकानंद के विचार अत्यंत व्यावहारिक और सर्वकालीन हैं। किंतु उन्हें लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। संसाधनों की कमी, शिक्षकों का प्रशिक्षण, सामाजिक चेतना की कमी, ये सभी बाधाएँ हैं। किंतु इन बाधाओं के बावजूद, विवेकानंद के विचारों को धीरे-धीरे लागू किया जा सकता है। छोटे-छोटे स्तरों से शुरुआत करके, धीरे-धीरे बड़े स्तर पर लागू किया जा सकता है। एक अन्य बिंदु यह है कि विवेकानंद के विचार भारतीय संदर्भ में दिए गए थे। आधुनिक समय में वैश्वीकरण हुआ है। विश्व एक गाँव बन गया है। इसलिए शिक्षा को इसी वैश्विक संदर्भ में भी समझना चाहिए। किंतु मूल सिद्धांत नैतिकता, चरित्र, आत्मविश्वास, ये सभी सार्वभौमिक हैं और किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में प्रासंगिक हैं।

9. निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन केवल उनके समय तक सीमित नहीं है। यह एक कालजयी दर्शन है। उनके विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की अनेक समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकते हैं। चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, नैतिकता और सर्वांगीण विकास, ये सभी आज भी शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में जब शिक्षा पूरी तरह बाजार-केंद्रित हो गई है, विवेकानंद के विचार हमें याद दिलाते हैं कि शिक्षा का असली उद्देश्य क्या है। शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखानी चाहिए। शिक्षा को मनुष्य को मनुष्य बनाना चाहिए, न कि मशीन बनाना चाहिए। शिक्षा को व्यक्ति के भीतर सोई हुई शक्तियों को जागृत करना चाहिए।

विवेकानंद की शिक्षा व्यवस्था व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास पर भी जोर देती है। शिक्षा केवल व्यक्तिगत सफलता के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी है। जब हर नागरिक आत्मविश्वासी, चरित्रवान और दूरदर्शी होगा, तब राष्ट्र का विकास स्वयं होगा। अंत में, कहा जा सकता है कि विवेकानंद के शैक्षिक विचार न केवल ऐतिहासिक महत्व के हैं, बल्कि वे आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए एक मार्गदर्शक हो सकते हैं। उनके विचारों को समझना, उन पर विचार करना और उन्हें क्रमशः लागू करना आजकी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा को इसी दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

Reference

- [1]. अग्रवाल, पावक और मिश्रा, लक्ष्मी. (2023). स्वामी विवेकानंद की मानव निर्माणकारी शिक्षा: वर्तमान परिप्रेक्ष्य, 11, K536-K545.
- [2]. बनर्जी, एके. (2015). स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन. शैक्षिक अनुसंधान और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(3), 30-35.
- [3]. बुच, एम.बी. (1972). शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण. बड़ौदा: सोसाइटी फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 31-35.
- [4]. बुच, एम.बी. (1974). शिक्षा में अनुसंधान का एक सर्वेक्षण. बड़ौदा: एमएस विश्वविद्यालय, 28-31.
- [5]. चौहान, संजीव कुमार, और डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा. (2022). स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 9(8), G52-G56.
- [6]. द्विवेदी, निशा. (2024). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन. International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology, 2(6), 18-22.
- [7]. कुमार, अनन्त. (2025). स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन. Anubodhan, 1, 49-61.
- [8]. कुमार, कीर्ति. (2024). स्वामी विवेकानंद का आधुनिक भारत के आध्यात्मिक और सामाजिक विकास में योगदान. International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT), 1(2), 323-334.
- [9]. कुमारी, प्रीति. (2022). आधुनिक युग में स्वामी विवेकानंद के नव्य वेदांत और शैक्षिक चिंतन की समालोचनात्मक विवेचना. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), 9(1), E662-E668.
- [10]. प्रेमी, महेन्द्र कुमार. (2012). संस्कृति, शिक्षा एवं धर्म के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद का दर्शन: एक दर्शन शास्त्रीय विवेचन. Research Journal of Humanities and Social Sciences, 3(3), 381-385.
- [11]. राजपूत, प्रमोद कुमार एवं उनियाल, डॉ० मदन मोहन. (2016). स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता. 7(1), 172-177.
- [12]. राठोड, प्रीति जे. (2014). स्वामी विवेकानंदजी के दार्शनिक विचारों में अध्ययन मुक्ति. International Journal of Research in all Subjects in Multi Languages (IJRSML), 2(6), 20-26.
- [13]. रेणू, कु०, और भूपेंद्र सिंह चौहान. (2022). वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 19(4), 330-334.
- [14]. शर्मा, संतोष कुमार, एवं अक्षय अग्रवाल. (2024). स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता. Recent Educational & Psychological Researches, 13(01), 77-80.
- [15]. सिंह, जनार्दन. (2025). स्वामी विवेकानंद एवं ऋषि अरविंद के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन. इन्टरनेट्सनल आफ् जोर्ल आफ् सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमानिटिज़, 7(5), 137-42.

- [16]. यादव, विक्रम सिंह. (2025). स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता. International Journal of Social Science Research (IJSSR), 2(1), 1-8.

Cite this Article:

विजय सिंह एवं डॉ. निरूपमा जैन, " स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान युग में उपादेयता", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)*, ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 7, pp. 12-17, Jul 2026.

Journal URL: <https://vijact.com>

DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i7.68>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content of this article, including its accuracy, originality, and ethical compliance. The publisher and editors assume no liability for any errors, copyright issues, or consequences arising from its publication or use.